शुगर केन की न्यू वैरायटी होगी और भी ज्यादा स्वीट

PICS: DAINIK JAGRAN INEX

अभी देश में जितनी एथेनॉल की डिमांड है उसका 6 परसेंट प्रोडक्शन हो रहा

kanpur@inext.co.in

KANPUR (7 June): शुगर केन की न्यू वैरायटी में करीब .5 परसेंट शुगर ज्यादा मिलेगी. हालांकि अभी दो साल तक न्यू शुगर केन का सीड फार्मर को नहीं मिलेगा. आईसीएआर के शुगरकेन ब्रीडिंग सेंटर करनाल हरियाणा में न्यू वैरायटी का ट्रायल बीते एक साल से चल रहा है. सेंटर में दो साल तक और ट्रायल चलेगा. अभी शुगर केन में 11.5 परसेंट शुगर की रिकवरी हो रही है. इस न्यू वैरायटी के बाद रिकवरी करीब 12 परसेंट हो जाएगी.

2022 तक 10 परसेंट एथेनाल

यह जानकारी एनएसआई की एडवाईजरी कमेटी की मीटिंग में शिरकत करने शहर आए करनाल हरियाणा के शुगरकेन ब्रीडिंग सेंटर डायरेक्टर डॉ. बख्शी राम ने दी. उन्होंने बताया कि यूपी में बीते दो साल से शुगरकेन की सीओ 0238 वैरायटी का प्रोडक्शन किया जा रहा है जिसमें कि 11.5 परसेंट शुगर रिकवरी मिली रही है. यूपी के 69 परसेंट गन्ने की खेती में 0328 का प्रोडक्शन किया जा रहा है. इस वैरायटी को डॉ. बख्शी राम व उनकी टीम ने डेवलप किया है. आल

शुगर केन की न्यू वैरायटी को लेकर एडवाईजरी कमेटी की मीटिंग में चर्चा हुई.

पर्यावरण विज्ञान की नई लैब का किया गया इनॉग्रेशन

एनएसआई की एडवाईजरी बोर्ड की मीटिंग में सेंट्रल गवर्नमेंट के जे एस सुरेश वशिष्ठ ने कहा कि संस्थान को अब न्यू रिसर्च पर और ज्यादा फोकस करना होगा. संस्थान के रिक्त पदों पर शीघ्र ही रिक्रूटमेंट किया जाए. विदेशी संस्थानों से करार पर बोर्ड की मीटिंग में खुशी जाहिर की गई. इस अवसर पर न्यू पर्यावरण विज्ञान की लैब का इनॉग्रेशन भी किया. इस लैब में शुगर मिलों की कई टेस्टिंग की जा सकती है. संस्थान के निदेशक प्रो नरेन्द्र मोहन ने सभी गेस्ट का वेलकम कर आभार जताया. प्रोग्राम में सीएसएवीसी प्रो सुशील सोलोमन, जीके ठाकुर शेर सिंह, प्रो सीमा परोहा, डॉ. आशुतोष बाजपेई, एस के द्विवेदी मौजूद रहे.

आईसीएआर के इंस्टीट्यूट में दो साल ट्रायल होगा.

इंडिया डिस्टलरीज एसोसिएशन के डीजी वीएन रैना ने बताया कि अभी करीब 6 परसेंट पेट्रोलियम प्रोडक्ट में एथेनाल की मिक्सिंग की जा रही है. इस साल के लास्ट तक करीब 7.2 परसें एथेनाल का प्रोडक्शन होगा. तीन सा बाद 2022 में 10 परसेंट एथेनाल प्रोडक्शन देश में होने लगेगा.

एनएसआई में होगी चीनी मिलों के प्रदूषण की जांच

केंद्रीय संयुक्त सचिव शर्करा ने पर्यावरण विज्ञान प्रयोगशाला का किया शुभारंभ

अमर उजाला ब्यूरो

कानपुर। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) में देश की पहली सेंट्रल लैब बनाई गई है जहां चीनी मिलों से जुड़ी हर तरह की जांच हो सकेगी। इस लैब को राष्ट्रीय पर्यावरण विज्ञान प्रयोगशाला नाम दिया गया है। इसमें एनएसआई चीनी उत्पादन बढ़ाने के साथ चीनी मिलों का प्रदूषण भी कम करने का काम करेगा।

संस्थान के वैज्ञानिक शोध करके पहले प्रदूषण के बड़े कारकों का पता लगाएंगे, फिर उन्हें कैसे रोका जाए, इस पर काम करेंगे। शुक्रवार को इस लैब का शुभारंभ केंद्रीय संयुक्त सचिव (शर्करा) सुरेश वशिष्ठ ने किया। उन्होंने संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन के साथ पूरे लैब और संस्थान का निरीक्षण भी किया। प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि इस लैब में शुगर, इथेनॉल, खोई की जांच भी हो सकेगी। प्रो. मोहन के मुताबिक मिलों से निकलने वाला गंदा पानी,

देश की पहली सेंट्रल लैब जहां चीनी मिलों से जुड़ी सारी जांचें होंगी

एनएसआई में लैब का शुभारंभ केंद्रीय संयुक्त सचिव (शर्करा) सुरेश वशिष्ठ प्रो. नरेंद्र मोहन, प्रो. सुशील सोलोमन।

डिस्टलरी से निकलने वाला गंदा पानी सिर्फ नदियों, तालाबों को ही नहीं बल्कि मिट्टी को भी अधिक प्रदूषित कर रहा है। इसलिए भी इस लैब की काफी जरूरत थी। अभी तक केवल चीनी, एथेनॉल, खोई की जांच यहां होती थी। अब यहां निकलने वाले गंदे पानी की भी जांच होगी।

संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि पिछले वर्ष संस्थान में क्वालिटी कंट्रोल एंड एनवायरमेंट साइंस का नया पाठयक्रम शुरू कराया गया था। इसके लिए एक अत्याधुनिक लैब चाहिए थी। अब लैब शुरू होने से इस कोर्स के छात्रों को भी सहूलियत मिलेगी।

बाजार में बिकेगा बगास से बना मशरूम, डिटर्जेंट

कानपुर। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) में शुक्रवार को सलाहकार बोर्ड की बैठक हुई। इसमें तय हुआ कि गन्ने का प्रयोग अब केवल गुड़ और चीनी तक सीमित नहीं रखा जाएगा बल्कि इसके अन्य उत्पाद भी बाजार में उतारे जाएंगे। इनमें गन्ने की बगास (खोई) से बने मशरूम, बॉयो-सीएनजी, डिटर्जेंट पाउडर जैसे अनेक उत्पाद शामिल हैं। बैठक में केंद्र सरकार के संयुक्त सचिव शर्करा सुरेश वशिष्ठ ने कहा कि ये उत्पाद तैयार करने में वैज्ञानिकों ने बड़ी सफलता हासिल की है। हालांकि ये अभी सिर्फ लैब तक सीमित हैं। इन उत्पादों को अब जल्द से जल्द इंडस्ट्री तक ले जाएं ताकि इसका लाभ समाज के हर वर्ग को मिल सके। बैठक में एनएफसीएसएफ के प्रबंध निदेशक प्रकाश नायक नावरे, आईएसएमए के निदेशक जीके ठाकुर, शुगरकेन ब्रीडिंग इंस्टीट्यूट कोयंबटूर के निदेशक डॉ. बख्शी राम और नेशनल टेस्ट हाउस के निदेशक डॉ. शेर सिंह मौजूद रहे।

संस्थान की गतिविधियों की समीक्षा

बोर्ड के सदस्यों ने संस्थान की पिछले एक वर्ष की शैक्षणिक, अनुसंधान एवं परामर्श सेवाओं की समीक्षा की। सदस्यों ने विभिन्न प्रयोगशाला, स्पेशल शुगर डिवीजन, नैनो ब्रीवरी और इथेनॉल यूनिट का निरीक्षण किया। सभी ने संस्थान के कार्यों की सराहना की। खासतौर पर श्रीलंका, इंडोनेशिया और मिस्र से किए गए एमओयू की काफी तारीफ की। शोध को बढ़ावा देने के लिए एक्टिविटी के खाते में अतिरिक्त बजट देने का प्रस्ताव भी पास हुआ।

लैब से रिसर्च कर इण्डस्ट्री तक पहुंचाये वैज्ञानिक

सलाहकार बोर्ड की बैठक की अध्यक्षता संयुक्त सचिव सुरेश वशिष्ठ ने की

कानपुर, 7 जून। चीनी के सह उत्पादों का मार्केट में जल्द लाना होगा और बगास को फेंकने के बजाए उससे मशरूम, बॉयो-सीएनजी, डिटर्जेंट पाउडर जैसे अनेक उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं। लैब में रिसर्च कर जल्द से जल्द इंडस्ट्री तक ले जाये, ताकि चीनी मिलों के साथ ही समाज के हर वर्ग को इसका सीधा लाभ मिले सके। यह बात भारत सरकार, शर्करा के संयुक्त सचिव (शर्करा) सुरेश वशिष्ठ ने कही। आज दोपहर में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में सलाहकार बोर्ड की बैठक की अध्यक्षता सुरेश वशिष्ठ ने की। बोर्ड के सदस्यों ने संस्थान की पिछले एक वर्ष की शैक्षणिक, अनुसंधान एवं परामर्श सेवाओं की समीक्षा की गई। सदस्यों ने विभिन्न प्रयोगशाला, स्पेशल शुगर डिवीजन, नैनो ब्रीवरी और इथेनॉल यूनिट का निरीक्षण किया। उन्होंने संस्थान के कार्यों की सराहना की। श्रीलंका, इंडोनेशिया और मिस्त्र से किए गए एमओयू पर चर्चा के साथ सराहना की। बैठक में सदस्यों ने शोध कार्य में गति तेज करने का निर्देश दिया। साथ ही शर्करा से जुड़ी नई-नई तकनीक शिक्षक सीख सकें, इसके लिए संस्थान के शिक्षकों को दुनिया में होने वाले सेमिनार और कार्यशाला में सम्मिलित होने की अनुमति दी जाए। शोध को बढ़ावा देने के लिए एक्टिविटी के खाते में अतिरिक्त बजट दिया जाए। इस दौरान एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन, एनएफसीएसएफ के प्रबंध निदेशक प्रकाश नायक नावरे, आईएसएमए के निदेशक जीके ठाकुर, शुगरकेन ब्रीडिंग इंस्टीट्यूट कोयंबटूर के निदेशक डॉ. बख्शी राम, नशनल टेस्ट हाउस के निदेशक डॉ. शेर सिंह आदि मौजूद रहे।

अधिकारियों के साथ बैठक लेते संयुक्त सचिव सुरेश वशिष्ठ, प्रो. नरेंद्र मोहन।

शर्करा संस्थान में बनी पर्यावरण विज्ञान प्रयोगशाला

कानपुर (एसएनबी)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में शुक्रवार को हुई सलाहकार समिति की बैठक में सभी ने संस्थान के कार्यकलापों व उपलब्धियों की सराहना की। भारत सरकार के उपभोक्ता मामले एवं सार्वजनिक वितरण प्रणाली विभाग के संयुक्त सचिव (शर्करा) सुरेश वशिष्ठ की अध्यक्षता में बैठक में हुई।

बैठक में संस्थान की गत एक वर्ष की शैक्षणिक, अनुसंधान एवं परामर्श सेवाओं की समीक्षा की गयी। समिति के सदस्यों ने विभिन्न प्रयोगशालाओं, स्पेशल शुगर डिवीजन, नैने ब्रीवरी एवं इथेनॉल यूनिट का निरीक्षण भी किया। सदस्यों ने संस्थान द्वारा श्रीलंका, इंडोनेशिया एवं मिस्त्र से किये गये अनुबंध पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि संस्थान भविष्य में दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों के साथ भी इस प्रकार के अनुबंध करने में सक्षम होगा। संयुक्त सचिव सुरेश वशिष्ठ ने संस्थान की मूलभूत सुविधाओं के विकास एवं संस्थान के रिक्त पदों को भरने हेतु सहयोग करने का आश्वासन दिया। बैठक में शर्करा संस्थान के निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन, नेशनल फेडरेशन ऑफ कोऑपरेटिव शुगर फैक्टरीज लिमिटेड के प्रबंध निदेशक प्रकाश नायक नावरे, इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन (इस्मा) के निदेशक जीके ठाकुर, शुगरकेन ब्रीडिंग इंस्टीट्यूट कोयम्बटूर के निदेशक डॉ. बख्शीराम एवं नेशनल टेस्ट हाउस के निदेशक डॉ. शेर सिंह ने भाग लिया। बैठक के बाद संयुक्त सचिव सुरेश वशिष्ठ के हाथों संस्थान की नवनिर्मित पर्यावरण विज्ञान प्रयोगशाला का उद्घाटन भी कराया गया। निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन ने बताया कि इस प्रयोगशाला का प्रयोग छात्रों के अतिरिक्त चीनी मिलों के उत्प्रवाह के परीक्षण हेतु भी किया जाएगा।

बैठक करते संयुक्त सचिव (शर्करा) सुरेश वशिष्ठ, निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन व अन्य।

कोटे की दुकान से सबको सस्ती चीनी बेचने की योजना नहीं : संयुक्त सचिव

कानपुर। भारत सरकार के उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग के संयुक्त सचिव (शर्करा) सुरेश वशिष्ठ ने कहा कि फिलहाल कोटे की दुकान से सभी राशन कार्डधारकों को सस्ती चीनी बेचने की कोई योजना नहीं है। अंत्योदय योजना के तहत गरीबों को केंद्र सरकार के अनुदान पर सस्ती चीनी का वितरण जारी रहेगा। देश में मांग से ज्यादा चीनी उत्पादन के मद्देनजर कोटे की दुकान से सभी राशन कार्डधारकों को सस्ती चीनी उपलब्ध कराये जाने के सवाल पर उनका कहना था कि आप अनुमान लगाते रहिये। श्री वशिष्ठ राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की सलाहकार समिति की बैठक में बतौर अध्यक्ष भाग लेने आये थे। पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि देश में इस वर्ष भी खपत से ज्यादा चीनी उत्पादन का अनुमान है। अत्यधिक चीनी उत्पादन के मद्देनजर चीनी के इतर उपयोग के सवाल को वह टाल गये। उन्होंने कहा कि संस्थान द्वारा रिसर्च के क्षेत्र में काम करने की जरूरत है, ताकि चीनी मिलों को कार्यकुशल बना उत्पादन लागत कम की जा सके।

चीनी मिलों का प्रदूषण कम करेगा एनएसआई

पहल

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) चीनी उत्पादन बढ़ाने के साथ चीनी मिलों का प्रदूषण भी कम करेगा। संस्थान के वैज्ञानिक शोध करके पहले प्रदूषण के बड़े कारकों का पता लगाएंगे, फिर उन्हें कैसे रोका जाए, इस पर दोबारा शोध करेंगे। इसके लिए संस्थान में नई पर्यावरण विज्ञान प्रयोगशाला बनाई गई है। यह देश की इकलौती प्रयोगशाला होगी, जहां चीनी मिल से जुड़े हर तरह की जांच की जाएगी। फिर चाहे शुगर, इथेनॉल, खोई हो या फिर निकलने वाला गंदा पानी। चीनी मिल व डिस्टलरी से निकलने वाला गंदा पानी सिर्फ नदियों, तालाबों को नहीं मिट्टी को अधिक प्रदूषित कर रहा है।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में शुक्रवार को बनी नई पर्यावरण विज्ञान प्रयोगशाला का उद्घाटन भारत सरकार के संयुक्त सचिव (शर्करा) सुरेश वशिष्ठ ने किया। संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने लैब का निरीक्षण कराया। उन्होंने बताया कि पिछले वर्ष संस्थान में क्वालिटी कंट्रोल एंड एनवायरमेंट साइंस का नया पाठ्यक्रम शुरू कराया गया था। इसके लिए एक अत्याधुनिक लैब चाहिए थी। इस लैब में इस पाठ्यक्रम के छात्र भी पढ़ सकेंगे। साथ ही यह देश की पहली ऐसी लैब होगी, जहां चीनी मिल से जुड़ी हर तरह की जांच हो सकेगी।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में शुक्रवार को हुई बैठक में कई अहम मुद्दों पर चर्चा की गई। • हिन्दुस्तान

लैब से इंडस्ट्री तक ले जाएं तकनीक

कानपुर। चीनी को फ्लेवर्ड चीनी बनाया जा रहा है। बगास को फेंकने के बजाए उससे मशरूम, बॉयो-सीएनजी, डिटर्जेंट पाउडर जैसे अनेक उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं। यह वैज्ञानिकों की बड़ी सफलता है। लेकिन, यह सिर्फ लैब तक सीमित है। इसे जल्द से जल्द इंडस्ट्री तक ले जाएं, जिससे कि इसका लाभ समाज के हर वर्ग को मिल सके। यह बात भारत सरकार के संयुक्त सचिव (शर्करा) सुरेश वशिष्ठ ने कही। शुक्रवार को सलाहकार बोर्ड की बैठक में सदस्यों ने संस्थान की पिछले एक वर्ष की शैक्षणिक, अनुसंधान एवं परामर्श सेवाओं की समीक्षा की। श्रीलंका, इंडोनेशिया और मिस्त्र से किए गए एमओयू की सराहना की। बैठक में एनएफसीएसएफ के प्रबंध निदेशक प्रकाश नायक नावरे, आईएसएमए के निदेशक जीके ठाकुर, शुगरकेन ब्रीडिंग इंस्टीट्यूट कोयम्बटूर के निदेशक डॉ. बख्शी राम व नेशनल टेस्ट हाउस के निदेशक डॉ. शेर सिंह ने हिस्सा लिया।

नई पर्यावरण लैब का उद्घाटन

नये कोर्स की पढ़ाई भी

कानपुर, 7 जून। चीनी उत्पादन बढ़ाने के साथ चीनी मिलों के बढ़ते प्रदूषण को कम करने के साथ ही नये शोध कर प्रदूषण के बड़े कारकों का पता लगाया जाएगा। प्रदूषण को रोकने के साथ नई तकनीकि के साथ शोध कार्य होंगे। यह देश की पहली ऐसी अत्याधुनिक प्रयोगशाला होगी, जहां चीनी मिलों से जुड़े हर किस्म की गुणवत्ताकारक उत्पाद और प्रदूषण की जांच की जाएगी। एनएसआई कैंपस में नई पर्यावरण विज्ञान प्रयोगशाला का उद्घाटन भारत सरकार के संयुक्त सचिव (शर्करा) सुरेश वशिष्ठ ने फीता काट कर किया और लैब का निरीक्षण भी किया। संस्थान, निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि पिछले वर्ष संस्थान में क्वालिटी कंट्रोल एंड एनवायरमेंट साइंस का नया पाठ्यक्रम शुरू कराया गया था। इसके लिए एक अत्याधुनिक लैब चाहिए थी। इस लैब में इस पाठ्यक्रम के छात्र भी पढ़ सकेंगे। साथ ही यह देश की पहली ऐसी लैब होगी, जहां चीनी मिल से जुड़ी हर तरह की जांच हो सकेगी। अभी तक चीनी, एथेनॉल, खोई की जांच होती थी। अब यहां निकलने वाले गंदे पानी की भी जांच होगी।